

29, 3 vgl. 1. प्रदिप्रः प्र सुमतिं संवितर्वाय उतपे महेस्वत्तं मत्सुरं मादपायः AV. 4, 23, 6, wo man मादयेवे oder मादयेवाम् erwartet hätte. — Vgl. प्रमन्दनी.

— घ्राप्र 1) *ergötzen, erfreuen*: श्रित्यज्ञौ मा धिपञ्जिन्वासौ श्रिभि हि प्रमन्दुः RV. 7, 33, 1. यं विप्रा उक्थवाकुसो ऽभिप्रमन्दुरायवः 8, 12, 13. med.: वामये वसुपतिं वसुनामभि प्र मन्दे अघोरेषु 5, 4, 1. कया त्वं न उ-
त्याभि प्र मन्दसे वृषन् 8, 82, 19. — 2) *verwirren, betäuben, confundere* (vgl. प्र 2. und वि): श्रिभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः RV. 6, 18, 9.

— विप्र, partic. in der uns unverständlichen Stelle: निर्वर्त्य तत्र व-
ह्लोयत्वविप्रमत्तवीवाकम् झलविधिम् KATHS. 34, 255.

— संप्र, partic. संप्रमत्त 1) *brünstig*: नाग HARIV. 4093. *versessen auf* (inf.): यतस्वमनैर्दिवितुं संप्रमत्तः MBH. 8, 3509; vielleicht nur Druckfehler für संप्रवृत्तः, wie die ed. Bomb. liest. — 2) *sorglos, achtlos* MBH. 2, 1467.

— वि 1) *verworren werden, aus der richtigen Verfassung kommen*: अमुरी प्रातः सवनमवालेद्वयमायत् AIR. Br. 2, 22. विमत्त ebend. *brünstig*: मतङ्ग Kir. 5, 47. — 2) *irre machen, aus der Lage bringen*: असुरा-
न्यमदन् ÇĀṆKH. Br. 22, 6. पञ्चमानाः पाप्मानं विमदन्ति ebend. — *caus. confundere*: वि तं ईर्ष्याममोदम् AV. 7, 74, 3. विमदित KĀTH. 29, 1 = विमत्त AIR. Br. 2, 22.

— सम् 1) *sich mit andern ergötzen*: यः सुष्माणोभिर्मदिति सं क्वीरैः RV. 4, 29, 2. — 2) *mit Etwas d. h. an Etwas sich ergötzen*: समन्धसा ममदः पूछेन RV. 4, 20, 4. रायस्योपेयैण समिया मंदेम VS. 4, 1. med.: यदा मृतसु मन्दसे समिन्दुभिः RV. 8, 12, 16. तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति 10, 82, 2. संप्रमत्त *aufgeregt, hingerrissen von, berauscht* (in übertr. Bed.) MBH. 14, 1760. तस्य त्रयेण 1, 7727. 13, 2263. काम 1, 7722. अतमद 3, 2263. गुह्य 1, 1369. HARIV. 4348. मतात्तरं Verz. d. Oxf. H. 253, b, 20. *brünstig* (Elephant): (तम्) अम्यद्रवत संप्रमत्तो (संप्रमत्तो ed. Bomb.) वने मतमिव द्विपम् MBH. 6, 5428. — Vgl. संमद, संमाद. — *caus. in heitere Stimmung versetzen; betrunken machen*: देविकाश्च देवीशोभयोर्यज्ञे सममादयम् AIR. Br. 3, 48. med. *begeistert oder betrunken sein*: समेव तृतीयसवने माद-
यते 6, 11.

2. मद्, मन्द, मदति (s. उपनि), ममँतन, ममन्धि, अममन्; *zögern, zuwar-
ten, stillstehen*: मो पु प्र तैर्धुर्मुकुर्निमन्धि RV. 10, 27, 20. अयेडु प्रा-
णीदममन्निमाहा 32, 8. यदि आतो जुह्वानं यद्यथातो ममत्तन 179, 1. —
Vgl. मन्द.

— नि s. निमद *langsame und deutliche Aussprache*. — *caus. निमाद-
यति = अतरं स्पष्टमुच्चारयति* SĀ. bei West.

— उपनि *zum Stillstehen bringen, zurückhalten*: पशवो वसु तानेतदेवा
अतिष्ठमानोस्वष्टारमनुवन्नुपनिमदति यदाह देव त्वष्टर्वसु रमेति ÇAT. Br.
3, 7, 11. इदमेवैतदेतः सिक्तमुपनिमदति 4, 3, 2, 4. अन्नमपचिक्रमिषडुप-
निमदति 6, 9, 5.

मँ (von 1. मद्) 1) m. P. 3, 3, 67 (oxyt. nach gaṇa पचादि zu P. 3, 1,
134). = माद AK. 3, 3, 12. a) *Heiterkeit, gute Laune, Begeisterung, Auf-
geregtheit, Rausch, Betrunkenheit*; = कुर्य AK. 3, 4, 10, 94. H. an. 2, 281. MED. d. 12. = मुन्मोक्तसंभेद, नैव्य H. 312. H. an. = मदनियं जैत्रम् Nih.
4, 8. गोदा इद्वेता मरुः RV. 1, 4, 2. 81, 1. सुतस्य मरुः अकुम्भिके जघान
2, 15, 1. द्दे वो मरुः तृतीयं सर्वन् मदाय 4, 34, 4. कर्त्तुं दत्ताय वृक्ते मदाय
5, 43, 5. 6, 40, 2. 7, 82, 3. 8, 15, 4. 46, 8. अन्धसः 14. 10, 104, 2. मरुं च मदनं

च विवर्धयति Spr. 31. मदाय सोमो मदाय सुरा ÇAT. Br. 12, 7, 2, 12. ÇĀṆKH.
Çr. 8, 23, 1. TATTVA. 20. SUÇR. 1, 43, 14. चिरेण शैथिल्ये पुंसि पानतो ज्ञा-
यते मरुः 192, 2. 2, 477, 16. ÇĀṆKH. SĀṆH. 1, 7, 26. संमोहान्दसंभेदो मरुः
मद्योपयोगजः SĀH. D. 174. M. 7, 47. मोहित 11, 96. JĀṆ. 2, 214. मदेन
विनयः (रुतः) Spr. 648 (vgl. क्रोर्मद्यादिनश्यति 1260). 3002. मदिरामदा-
न्ध BHĀG. P. 3, 28, 37. पान 1. KĀM. NĪTIS. 14, 63. सुरापान 1. MĀRK. P. 113,
5. क्रियतामस्य मदापनयनम् PRAB. 62, 4. KĀVĀD. 2, 89. BHĀG. P. 1, 17, 39.
तमत्तमदसंमतम् Würfelrausch, Würfelheber MBH. 3, 2263. Liebesrausch,
Geilheit, Brunst: काम वेदे ते नाम मरुः नामासि Ind. St. 5, 303. °विह्व-
लिता R. 1, 9, 15. °विह्वला 25, 37. अभिनवमदलीलालालसं सुन्दरीणां यौ-
वनम् Spr. 683. मदेन नारी (अलंक्रियते) 3040. (नितम्बिनी) सुरेव मदका-
रणम् 4097. उन्नद्ध 1. adj. BHĀG. P. 4, 27, 4. आतपातसंधुक्षितमदा परभता
VIKA. 39, 2. परभृतस्य मदाकुलस्य R. 6, 32. मद्रक्तस्य कंसस्य कोकिलस्य
शिखापिनः Spr. 4683. गोपतिमदवृद्धि VARĀH. BRH. S. 46, 85. अतर्मदा-
वस्थ इव द्विपेन्द्रः RAGH. 2, 7. मदान्तस्य कुञ्जरस्य Spr. 2096. °वीर्य PĀN-
KĀT. 87, 16. सदा 1. (मातङ्ग) Spr. 1324, v. 1. नागो °पटुः (= प्रवृत्तः
Schol.) MBH. 12, 4297. Hochmuthsrausch, Hochmuth, Uebermuth, Dün-
kel; = गर्व, अहंकार TRIK. 3, 3, 209. fg. H. an. MED. HALĀJ. 4, 37. मरुः
विकारः सौभाग्यविवानाद्यवलेपः SĀH. D. 145. BHĀG. 18, 33. KĀM. NĪTIS.
10, 3 (ebend. 6 ist wohl मदेन st. मदेन zu lesen). धनवानिति हि मरुस्ते
Spr. 1292. दुर्मात्सर्यमदाभिमानमयन 2046. सतां वचनमादिष्टं मदेन न
करोति यः 3116. मदादिज्ञानं शास्त्रं मदानां कुरुते मरुम् 4684. ज्ञानं
सतां मानमदादिज्ञानं केषांचिदेतन्मदमानकारणम् 4089. सा श्रीर्या न मरुं
करोति 3223. मदाद्वितस्य नृपतेः 2093. मदान्तस्य भूपस्य 2096. 4312.
मरुर्जित RĀGA-TAR. 5, 214. KATHS. 42, 10. 46, 64. युक्तमदा adj. MĀLAV.
34, 3. कतिपयपुरस्वाम्ये पुंसो क एष मरुस्वरः Spr. 2829. श्रुतधनकुलक-
र्माणो मरुः BHĀG. P. 4, 31, 21. विद्यामरुः धनमदस्तृतीयो ऽभिज्ञो मरुः ।
मदा एते ऽवलितानामेत एव सतां दमाः ॥ Spr. 2798. धनमरुद्विज्ञाः KA-
THS. 18, 129. श्री 1. BHĀG. P. 6, 7, 9. PĀNKĀT. 202, 25. मत्तं राश्यमदेन HA-
RIV. 3134. यौवन 1. Spr. 3036. KATHS. 18, 277. शास्त्रविद्या 1. 27, 141. ध-
नरत्नमदाभ्यां च सुरापानमदेन च ॥ सर्वैरेतैर्मर्दितैः MBH. 1, 7724. fg. ऐ-
श्वर्यमदमत्तांश्च मत्तान्मद्यमदेन च 12, 12550. ऐश्वर्यमदपापिष्ठा मदाः पानम-
दायः Spr. 3834. — b) *erheiternder —, begeisternder —, berauschender*
Trank; = मद्य H. an. RV. 1, 20, 5. 80, 2. वृक्षो मरुस्य त्वमीशिषे 2, 16, 6.
4, 17, 6. 26, 6. इराकः पीतिमुत वो मरुं धुः 33, 11. सं मरुः अमता वः 34,
1. 2. सं मरुंभिरिन्द्रियैर्भिः पिवधम् 33, 9. सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति मरुः
6, 44, 1. ÇĀṆKH. Çr. 9, 3, 3. मदानो पतिः RV. 8, 82, 31. °तीव LA. (II) 87, 6.
अस्पृष्ट 1. Spr. 3333. Honigseim: मरुगुरुपतैः — अलिवन्दैः RAGH. 12, 102.
— c) *Brunstsaft eines Elephanten* AH. 2, 8, 2, 5. TRIK. H. 1223. H. an.
MED. HALĀJ. 2, 62. 65. त्रिःप्रसृतमद (मतङ्गराज्) MBH. 1, 5885. °प्रस्रवणा
3, 2538. स्रवन्मद इव द्विपः R. GORR. 2, 103, 13. RAGH. 4, 23. वनगजमरुः
MEGH. 20. VARĀH. BRH. S. 50, 20. अलिकुलैर्मदाशिनैः BHĀG. P. 8, 2, 22. कु-
म्भमितिच्युतमदमदिरा PRAB. 78, 13. °प्रसक्त R. 6, 93, 19. bei einem gei-
len Weibe Spr. 133. — d) *der männliche Same* TRIK. H. an. MED. —
e) *Moschus* TRIK. H. an. MED.; vgl. कस्तूरिकामद TRIK. 3, 3, 288. MED.
bh. 6 und मृगमद. — f) *ein schönes Ding*, = कल्याणवस्तु DHAR. im
ÇKDR. — g) *Fluss* ebend. — h) *der personif. Rausch* ist ein Ungeheuer,
welches Kāvāna schafft um Indra zu zwingen, der es nicht zugeben